

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्तं

‘सगलपक्खेवे खंडिदे तत्थ एगखंडपमाणं होदि । पुणो एत्थ सयलपक्खेवबंधविहाणं जोगह्णणध्दाणं च जाणिदूण भाणिदव्वं । एवं वड्ढिदूण द्विदतदियसम(अ-काप्रत्यो: ‘समए’ इति पाठः ।)यणेरइओ च, पुणो जहण्णजोग-जहण्णबंधगध्दाहि बंधिदूणागदबिदियसमयणेरइओ(अ-आ-काप्रतिषु ‘बिदियणेरइयो’, ताप्रतौ ‘बिदिय (समय) णेरइओ’ इति पाठः ।) च, सरिसा । संपहि बिदियसमयणारगदव्वम्मि परमाणुत्तरादिकमेण एगविगलपक्खेवो वड्ढावेदव्वो । एत्थ विगसलपक्खेवो एगगलपक्खेवे(अ-कप्रत्यो: ‘पक्खेवं’ इति पाठः ।)दिवड्ढ(प्रतिषु ‘पक्खेवदिवड्ढ’ इति पाठः ।)गुणहाणीए खंडिदे तत्थ एगखंडेणूणस-गलपक्खेवमेत्तो । पुणो एत्तियमेत्तं वड्ढिदूण द्विदो च, अण्णेगो समऊण (जहण्ण) बंधगध्दाए जहण्णजोगेण बंधिय पुणो एगसमएण पक्खेवुत्तरजोगेण बंधिय णारग-बिदियसमयद्विदो च, सरिसा । एदेण कमेण दिवड्ढगुणहाणिमेत्तविगलपक्खेवेसु वड्ढि-देसु रूवूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तसयलपक्खेवा वड्ढंति । एवं ताव वड्ढावेदव्वं जाव णारगपढमगोवुच्छ वड्ढिददा ति ।

‘पुणो तिस्से सयलपक्खेवगवेसणा कीरदे । तं जहा-एगसयलपक्खेवे दिवड्ढ-गुणहाणीए खंडिदे पढमणिसेओ आगच्छदि । एदेण पमाणेण सव्वसगलपक्खेवेसु अव-णिय पुध ड्ढविय ते सगलपक्खेवे कस्सामो-- दिवड्ढगुणहाणिमेत्तविगलपक्खेवेसु जदि

< सकल प्रक्षेपको खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण है । >

< अब यहां सकल प्रक्षेपकेबन्धनविधान और योगस्थानाध्वानको जानकर कहना चाहिये । इस प्रकार बढकर स्थित तृतीय समयवर्ती नारकी, तथा जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे आयुको बांधकर आया हुआ द्वितीय समयवर्ती नारकी, दोनों सदृश हैं । अब द्वितीय समयवर्ती नारकीकेद्रव्यमें एक परमाणु अधिक आदिकेक्रमसे एक विकल प्रक्षेप बढाना चाहिये । यहां विकल प्रक्षेप एक सकल प्रक्षेपको डेढ गुणहानिसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्डसे हीन सकल प्रक्षेप प्रमाण है । पुनः इतना मात्र बढकर स्थित, तथा दूसरा एक जीव समय कम जघन्य बन्धककाल और जघन्य योगसे बांधकर पुनः एक समयमें प्रक्षेप अधिक योगसे बांधकर नारक भवकेद्वितीय समयमें स्थित, ये दोनों सदृश हैं । इस क्रमसे डेढ गुणहानि मात्र विकल प्रक्षेपोंकेबढ

जानेपर एक कम डेढ गुणहानि मात्र सकल प्रक्षेप बढ़ते हैं । इस प्रकार नारकीके प्रथम गोपुच्छके बढ़ने तक बढ़ाना चाहिये । >

< अब उसके सकल प्रक्षेपोंकी गवेषणा करते हैं । वह इस प्रकार है--एक सकल प्रक्षेपको डेढ गुणहानिसे खण्डित करनेपर प्रथम निषेक आता है । इस प्रमाणसे सब सकल प्रक्षेपोंमेंसे कम करके पृथक् स्थापित कर उनके सकल प्रक्षेप करते हैं--डेढ गुणहानि मात्र विकल प्रक्षेपोंमें यदि एक सकल प्रक्षेप पाया जाता है तो >

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

‘एगो सगलपक्खेवो लब्भदि तो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तविगलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धमेत्तसगलपक्खेवा पढमगोवुच्छाए (लब्भंति)।

‘संपहि जोगद्वाणध्दाणं वुच्चदे- तं जहा- रुवूणदिवड्ढुगुणहाणिमेत्तसयलपक्खे-वाणं जदि दिवड्ढुगुणहाणिमेत्तजोगद्वाणंद्वाण लब्भदि तो दिवड्ढुगुणहाणीए सगलप-क्खेवभागहारे खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तेसु सगलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धं जोगद्वाणध्दाणं होदि । पुणो एत्तियमेत्तजोगद्वाणाणं चरिमजोगद्वाणेण एगसमयं बंधिदूणागद, पुणो जहण्णजोग-जह-ण्णबंधगध्दाहि णिरयाउअं बंधिदूणागदपढमसमयणेरइओ च, सरिसा ।

‘संपहि णारगपढमसमए द्वाइदूण तिरिक्खचरिमगोवुच्छा पक्खेवुत्तरकमेण वड्ढावे-दब्बा । विदियसमयणेरइयस्स पुणो परमाणुत्तरादिकमेण तिरिक्खचरिमगोवुच्छा वड्ढा-विज्जदि । तं जहा- पढमगोवुच्छं वड्ढिदूण द्विदणारगविदियसमयदव्वस्सुवरि परमाणुत्त-रादिकमेण एगविगलपक्खेवं वड्ढिदूण द्विदणेरइओ च, अण्णेगो पक्खेवुत्तरजोगेण बंधि-

< श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र विकल प्रक्षेपोंमें कितने सकल प्रक्षेप पाये जावेंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र सकल प्रक्षेप प्रथम गोपुच्छमें पाये जाते हैं । >

< अब योगस्थानाध्वान कहा जाता है । वह इस प्रकार है--एक कम डेढ गुणहानि मात्र सकल प्रक्षेपोंका यदि डेढ गुणहानि मात्र योगस्थानाध्वान प्राप्त होता है तो डेढ गुण-हानि द्वारा सकल प्रक्षेपके भागहारको खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड मात्र सकल प्रक्षे-पोंमें कितना

योगस्थानाध्वान होता है । पुनः इतने मात्र योगस्थानोंमें अन्तिम योगस्थानसे एक समयमें आयुको बांधकर आया हुआ द्वितीय समयवर्ती नारकी, तथा जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे नारक आयुको बांधकर आया हुआ प्रथम समयवर्ती नारकी, ये दोनों सदृश हैं । >

< अब नारक भवके प्रथम समयमें स्थित होकर तिर्यच सम्बन्धी अन्तिम गोपुच्छको प्रक्षेप अधिक क्रमसे बढ़ाना चाहिये । परन्तु द्वितीय समयवर्ती नारकीको तिर्यच सम्बन्धी अन्तिम गोपुच्छ एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे बढ़ाई जाती है । वह इस प्रकारसे--प्रथम गोपुच्छ बढकर स्थित नारकीके द्वितीय समय सम्बन्धी द्रव्यके रूपर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेप बढकर स्थित नारकी, तथा एक दूसरा एक प्रक्षेप अधिक योगसे आयुको बांधकर आया >

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्तं

‘दूणागदो च, सरिसा । एदेण कमेण दिवङ्गुणहाणिमेत्तविगलपक्खेवेसु वड्ढिदेसु रुवू-णदिवङ्गुणहाणिमेत्ता सगलपक्खेवा पविसंति । एवं वड्ढिदूण द्विदबिदियसमयणेर-इओ च, अण्णेगो एगसमएण रुवूणदिवङ्गुणहाणिमेत्तजोगट्टाणाणं चरिमजोगट्टाणेण बंधिदूणागदपढमसमयणेरइओ च, सरिसा । एवं बिदियसमयणेरइयस्स परमाणुत्तरा-दिकमेण णिरंतरट्टाणाणि हवंति । पढमसमयणेरइयस्स पुणो पक्खेवोत्तरकमेण सांत-रट्टाणाणि हवंति । एदेण कमेण वड्ढावेदव्वं जाव तिरिक्खचरिमगोवुच्छपमाणं वड्ढिदे त्ति । एवं वड्ढिदूण द्विदो च, अण्णेगो जीवो जहण्णजोग-जहण्णबंधगध्दाहि णिरयाउअं बंधिय जहण्णजोग-जहण्णबंधगध्दाहि बध्द (अ-आ-काप्रतिषु ‘बंध’ इति पाठः ।) तिरिक्खचरिमसमयगोवुच्छं धरिय तिरिक्खचरिमसमए द्विदो च, सरिसा ।

‘संपहि तिरिक्खचरिमगोवुच्छए सयलपक्खेवाणं जोगट्टाणध्दाणस्स च गवेसणा कीरदे-तत्थ ताव सयलपक्खेवाणुगमं कस्सामो । तं जहा-तप्पाओग्गघोलमाण-जहण्णजोगपक्खेवभागहारं तिरिक्खाउअजहण्णबंधगध्दाए गुणिदं विरलेदूण जहण्ण-बंधगध्दामेत्तसमयपबध्देसु समखंडं करिय दिण्णेसु एक्खेक्कस्स रुवस्स एगेगो सयल-

< हुआ नारकी, दोनों सदृश हैं । इस क्रमसे डेढ गुणहानि मात्र विकल प्रक्षेपोंके बढनेपर एक अंकसे कम डेढ गुणहानि मात्र सकल प्रक्षेप प्रविष्ट होते हैं । इस प्रकार बढ-कर स्थित द्वितीय समयवर्ती नारकी, तथा एक दूसरा एक समयमें रूप कम डेढ गुणहानि मात्र योगस्थानोंमें अन्तिम

योगस्थानसे आयुको बांधकर आया हुआ प्रथम समयवर्ती नारकी, दोनों सदृश हैं । इस प्रकार द्वितीय समयवर्ती नारकीके एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे निरन्तर स्थान होते हैं । किन्तु प्रथम समयवर्ती नारकीके प्रक्षेप अधिक क्रमसे सान्तर स्थान होते हैं । इस क्रमसे तिर्यचकी अन्तिम गोपुच्छ प्रमाण वृद्धि हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव जघन्य बन्धककालसे नार-कायुको बांधकर जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे बांधी हुई तिर्यचकी अन्तिम समय सम्बन्धी गोपुच्छको धारण कर तिर्यच भवके अन्तिम समयमें स्थित हुआ, दोनों सदृश हैं । >

< अब तिर्यचकी अन्तिम गोपुच्छ सम्बन्धी सकल प्रक्षेपों और योगस्थानाध्वानकी गवेषणा करते हैं--उसमें पहिले सकल-प्रक्षेपानुगमको करते हैं । वह इस प्रकार है--तत्प्रायोग्य घोलमान जीवके जघन्य योग सम्बन्धी प्रक्षेपके भागहारको तिर्यच आयुके जघन्य बन्धककालसे गुणित करके विरलित कर जघन्य बन्धककाल प्रमाण समयप्रबद्धोंको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति एक एक सकल प्रक्षेप >

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

पक्खेवो पावदि । पुणो पुव्वकोडिं विरलिय एगसगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रुवस्स मज्झिमगोवुच्छपमाणं पावदि । पुणो मज्झिमगोवुच्छं पेक्खिदूण तिरिक्खचरिमगोवुच्छा रुवूणपुव्वकोडिअध्द (मप्रतिपाटोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिषु 'लध्द' इति पाठः ।) मेत्तगोवुच्छविसेसेहि हीणा होदि । पुणो एत्तियमेत्तविसेसाणं हाणिमिच्छिय रुवूणपुव्वकोडिअध्देणूणणिसेयभागहारं विर-लेऊण मज्झिमगोवुच्छं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रुवस्स एगेगविसेसो पावदि । संपहि रुवूणपुव्वकोडिअध्दमेत्तगोवुच्छविसेसे इच्छामो त्ति एत्तियमेत्तेहि चेव ओवट्टिय एस (अ-आ-काप्रतिषु 'एसु' इति पाठः ।) विरलणं रुवूणं कादूण जदि एत्तियमेत्तेसु एगरुवपक्खेवो लब्भदि तो पुव्वकोडिमेत्तेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लध्द-मेगरुवस्स असंखेज्जदिभागो । पुणो एदं पुव्वकोडीए पक्खिविय विरलिय एगसगल-पक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे रुवं पडि चरिमगोवुच्छपमाणं पावदि । एदमेत्थ विगलपक्खेवो होदि । एदेण विगलपक्खेवपमाणेण सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तसयल-

पक्खेवेसु अवणेदूण पुध डुविय पुणो ते सगलपक्खेवे कस्सामो । तं जहा-
एसभागहारमेत्तविगलपक्खेवेसु जदि एगो सयलपक्खेवो लब्भदि तो सगलपक्खेवभागहारमेत्त-

< प्राप्त होता है । फिर पूर्वकोटिको विरलित कर सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति मध्यम गोपुच्छका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः मध्यम गोपुच्छकी अपेक्षा तिर्यचकी अन्तिम गोपुच्छा रूप कम पूर्वकोटिके अर्ध भाग प्रमाण गोपुच्छविशेषोंसे हीन है । फिर इतने मात्र विशेषोंकी हानिकी इच्छा कर एक अंक कम पूर्वकोटिके अर्ध भागसे हीन निषेकभागहारका विरलन करके मध्यम गोपुच्छको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति एक एक विशेष प्राप्त होता है । अब चूंकि एक कम पूर्वकोटिके अर्ध भाग मात्र गोपु-च्छविशेष इच्छित हैं, अतः इतने मात्रोंसे ही अपवर्तित कर इस विरलनको एक अकसे कम करके यदि इतने मात्र गोपुच्छविशेषोंमें एक अंकका प्रक्षेप पाया जाता है तो पूर्वकोटि मात्र उनमें कितने अंक प्रक्षेप पाये जावेंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपव-र्तित करनेपर एक अंकका असंख्यातवां भाग लब्ध होता है । फिर इसका पूर्वकोटिमें मिलाकर विरलित करके एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति अन्तिम गोपुच्छका प्रमाण प्राप्त होता है । यह यहां विकल प्रक्षेप होता है । इस विकल प्रक्षेपके प्रमाणसे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेपोंमेंसे कम करक पृथक् स्थापित कर फिर उनके सकल प्रक्षेप करते हैं । वह इस प्रकारसे-- इस भागहार मात्र विकल प्रक्षेपोंमें यदि एक सकल प्रक्षेप प्राप्त होता है तो सकल-प्रक्षेप-भागहार मात्र विकल प्रक्षेपोंमें कितने >

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्तं

‘विगलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धमेत्ता सगलपक्खेवा
तिरिक्खचरिमगोवुच्छाए होंति ।’

‘संपहि जोगड्ढाणध्दाणगवेसणा कीरदे । तं जहा- रुवूणदिवड्ढुणहाणिमेत्तसय-लपक्खेवाणं
जदि दिवड्ढुणहाणिमेत्तजोगड्ढाणध्दाणं लब्भदि तो सेडीए असंखेज्जदि-भागमेत्तसयलपक्खेवेसु किं
लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए जोगड्ढाणध्दाणं लब्भदि । पुणो
एत्तियमेत्तजोगड्ढाणध्दाणस्स पुव्विल्लतप्पाओग्गजोग-ड्ढाणध्दाणादो असंखेज्जगुणस्स

चरिमजोगद्वाणेण बंधिदूणागदबिदियसमयणेरइओ च, पुणो तिरिक्खचरिमणिसेयम्मि जत्तिया सयलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्तजोगद्वाणाणं चरिमजोगद्वाणेण बंधिदूणागदपढमसमयणेरइओ च, तिरिक्ख-णिरयाउअं च जहण्ण-जोग-जहण्णबंधगध्दाहि बंधिदूणागदचरिमसमयतिरिक्खो च, सरिसा । पुणो चरिम-समयतिरिक्खदव्वं घेत्तूण परमाणुत्तरादिकमेण वड्ढावेदव्वं जाव एगविगलपक्खेवो वड्ढिदो त्ति । एत्थ विगलपक्खेवभागहारो सादिरेयपुव्वकोडि त्ति घेत्तव्वो । पुणो एत्तियं वड्ढिदूण द्विदो च, अण्णेगो पक्खेवुत्तरजोगेण तिरिक्खाउअमेगसमएण बंधिय तिरिक्खचरिमसमए द्विदो च, सरिसा । एदेण कमेण सादिरेयपुव्वकोडि-

< सकल प्रक्षेप प्राप्त होंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र सकल प्रक्षेप तिर्यचकी अन्तिम गोपुच्छमें होते हैं । >

< अब योगस्थानाध्वानकी गवेषणा करते हैं । वह इस प्रकार है-- एक कम डेढ गुणहानि मात्र सकल प्रक्षेपोंके यदि डेढ गुणहानि मात्र योगस्थानाध्वान प्राप्त होता है तो श्रेणिके असंख्यावें भाग मात्र सकल प्रक्षेपोंमें कितना योगस्थानाध्वान प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर योगस्थानाध्वान प्राप्त होता है । फिर पूर्वोक्त तत्प्रायोग्य योगस्थानाध्वानसे असंख्यातगुणे इतने मात्र योगस्थानाध्वानके अन्तिम योगस्थानसे आयुको बांधकर आया हुआ द्वितीय समयवर्ती नारकी, पुनः तिर्यचके अन्तिम निषेकमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र योगस्थानों सम्बन्धी अन्तिम योगस्थानसे आयुको बांधकर आया हुआ प्रथम समयवर्ती नारकी, तथा तिर्यच या नारक आयुको जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे बांधकर आया हुआ चरम समयवर्ती तिर्यच, ये तीनों सदृश हैं । अब चरम समयवर्ती तिर्यचके द्रव्यको ग्रहण करके एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेपके बढने तक बढाना चाहिये । यहां विकल प्रक्षेपका भागहार साधिक एक पूर्वकोटि ग्रहण करना चाहिये । अब इतना बढकर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव प्रक्षेप अधिक योगसे तिर्यच आयुको एक समयसे बांधकर तिर्यच भवके अन्तिम समयमें स्थित हुआ, दोनों सदृश हैं । इस क्रमसे साधिक पूर्वकोटि मात्र विकल प्रक्षेपोंके बढनेपर >

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

‘मेत्तविगलपक्खेवेसु वड्ढिदेसु एगो सगलपक्खेवो वड्ढदि । पुणो एदेण सरुवेण वड्ढा-वेदव्वं जाव पुव्वकोडिदुचरिमणिसेयम्मि जत्तिया सगलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता वड्ढिदा त्ति ॥

‘संपहि तिस्से दुचरिम (आप्रतौ ‘चरिम’ इति पाठः ।) गोवुच्छाए सगलपक्खेवगवेसणा कीरदे-एत्थ अधि- यारगोवुच्छभागहारो सादिरेयपुव्वकोडिमेत्तो होदि । किन्तु चरिमगोवुच्छभागहारादो किञ्चूणो । कुदो? चरिमणिसेगादो दुचरिमणिसेगस्स एगविसेसमेत्तेण अहियत्तुव-लंभादो । एदं विगलपक्खेवं सगलपक्खेवेसु सोहिय सगलपक्खेवे कस्सामो-सादि-रेयपुव्वकोडिमेत्तविगलपक्खेवेसु जदि एगो सगलपक्खेवो लब्भदि तो सेडीए असं-खेज्जदिभागमेत्तविगलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्ठि-दाए लध्दमेत्ता सगलपक्खेवा दुचरिमणिसेयम्मि होंति ॥

‘एण्हं जोगड्ढाणध्दाणं (प्रतिषु ‘जोगड्ढाणं’ इति पाठः ।) वुच्चदे । तं जहा-एगसगलपक्खेवस्स जदि सादि-रेयपुव्वकोडिमेत्तजोगड्ढाणध्दाणं लब्भदि तो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तसगलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्ठिदाए जोगड्ढाणध्दाणं होदि । हात्र

< एक सकल प्रक्षेप बढता है । फिर इस क्रमसे पूर्वकोटिके द्विचरम निषेकमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र बढने तक बढाना चाहिये । >

< अब उस द्विचरम गोपुच्छके सकल प्रक्षेपोंकी गवेषणा करते हैं--यहां अधिकार गोपुच्छका भागहार साधिक पूर्वकोटि प्रमाण होता है । किन्तु वह अन्तिम गोपुच्छके भागहारसे कुछ कम है, क्योंकि, चरम निषेकसे द्विचरम निषेक एक विशेष मात्रसे अधिक पाया जाता है । इस विकल प्रक्षेपको सकल प्रक्षेपोंमेंसे कम कर उसके सकल प्रक्षेप करते हैं--साधिक पूर्वकोटि मात्र विकल प्रक्षेपोंमें यदि एक सकल प्रक्षेप पाया जाता है तो श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र विकल प्रक्षेपोंमें कितने सकल प्रक्षेप पाये जावेंगें, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र सकल प्रक्षेप द्विचरम निषेकमें होते है । >

< अब योगस्थानका कथन करते हैं । यथा--एक सकल प्रक्षेपका यदि साधिक पूर्वकोटि मात्र योगस्थानाध्वान प्राप्त होता है तो श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेपोंमे कितना

योगस्थानाध्वान प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर योगस्थानाध्वान होता है । इतना होकर भी वह चरम >

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्तं

‘पि चरिमणिसेयजोगट्टाणध्दाणादो असंखेज्जगुण होदि । कारणं चिंतिय वत्तव्वं । दुचरिमणिसेगजोगट्टाणध्दाणादो तिचरिमणिसेगजोगट्टाणध्दाणं विसेसहीणं होदि । पुणो एवं हेट्टिम-हेट्टिमगोवुच्छाणं जोगट्टाणध्दाणं (अ-आ-काप्रतिषु ‘जोगट्टाणाणं’, ताप्रतौ ‘जोगट्टा (णा) ण’ इति पाठः ।) विसेसहीणं चेव होदि । पुणो एत्तियमेत्तजोगट्टाणेण बंधिदूणागदचरिमसमयतिरिक्खदव्वं च पुणो जहण्णजोग-जह-ण्णबंधगध्दाहि तिरिक्ख-णिरयाउअं बंधिदूणागददुचरिमसमयतिरिक्खदव्वेण सरिसं । पुणो एत्थ परमाणुत्तरादिकमेण एगविगलपक्खेवो वड्ढावेदव्वो । पुणो तस्स भागहारो चरिमगोवुच्छभागहारादो अध्दं किंन्वूणं होदि । पुणो तस्स भागहारमेत्तविगलपक्खे-वेसु वड्ढिदेसु एगो सगलपक्खेवो वड्ढिदि । जोगट्टाणध्दाणं पि भागहारमेत्तं चेव होदि । एवं ताव वड्ढावेदव्वं जाव पुव्वकोडितिचरिमगोवुच्छाए जत्तिया सगल-पक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता वड्ढिदा ति ।

‘पुणो तिस्से चरिमगोवुच्छाए सगलपक्खेवाणं गवेसणं कीरदे । तं जहा-चरिमगोवुच्छभागहारं सादिरेयपुव्वकोडिं विरलेदूण एगसगल-पक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे चरिमगोवुच्छपमाणं पावदि । पुणो रुवूणपुव्वकोडीए ऊण (अ-आ-काप्रतिषु ‘ऊणा’ इति पाठः ।) णिसेगभागहारस्स अध्देण रुवाहियेण

< निषेक सम्बन्धी योगस्थानाध्वानसे असंख्यातगुणा होता है । इसका कारण जानकर कहना चाहिये । द्विचरम निषेक सम्बन्धी योगस्थानाध्वानसे त्रिचरम निषेक सम्बन्धी योगस्थाना-ध्वान विशेष हीन है । इस प्रकार नीचे नीचेकी गोपुच्छाओंका योगस्थानाध्वान विशेष हीन ही होता है । अब इतने मात्र योगस्थानाध्वानसे आयुको बांधकर आये हुए चरम समयवर्ती तिर्यचका द्रव्य, तथा जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यच व नारक आयुको बांध-कर आये हुए द्विचरम समय सम्बन्धी तिर्यचका द्रव्य, समान होता है । फिर यहां एक पर-माणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेप बढाना चाहिये । अब उसका भागहार चरम गोपुच्छके भागहारसे कुछ कम आधा

होता है । पुनः इसके भागहार मात्र विकल प्रक्षेपोंकी वृद्धि हो जानेपर एक सकल प्रक्षेप बढता है । योगस्थानाध्वान भी भागहार प्रमाण ही होता है । इस प्रकार तब तक बढाना चाहिये जब तक कि पूर्वकोटिकी त्रिचरम गोपुच्छमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र नहीं बढ जाते । >

< अब उस चरम गोपुच्छ सम्बन्धी सकल प्रक्षेपोंकी गवेषणा करते हैं । वह इस प्रकार है- चरम गोपुच्छके भागहारभूत साधिक पूर्वकोटिका विरलन करके एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर चरम गोपुच्छका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः एक कम पूर्वकोटिसे हीन निषेकभागहारके अर्ध भागमें एक अंक मिलानेपर जो प्राप्त हो उससे >

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

सादिरेयपुव्वकोडीए ओवट्टिदाए लध्दं तम्हि चेव सोहिदे सुध्दसेसा तदित्थविगलपक्खे-वभागहारो होदि । एदेण सगलपक्खेवं खंडेदूण तत्थ एगखंडं सगलपक्खेवभागहार-मेत्तसगलपक्खेवेसु सोहिदूण पुध्द इविय पुणो एदे सगलपक्खेवे कस्सामो । तं जहा-एसमभागहारमेत्तविगलपक्खेवेसु जदि एगो सगलपक्खेवो लब्भदि तो सेडीए असं-खेज्जदिभागमेत्तविगलपक्खेवेसु किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टि-दाए पयदगोवुच्छाए सयलपक्खेवा होंति ।

एण्हि जोगट्ठाणध्दाणं वुच्चदे । तं जहा-एगसगलपक्खेवेसु जदि चरिमणिसेय-भागहारस्स किंन्चूणध्दमेत्तजोगट्ठाणध्दाणं लब्भदि तो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तसग-लपक्खेवेसु किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए जोगट्ठाणध्दाणं होदि । एत्तियमेत्तजोगट्ठाणाणं चरिमजोगट्ठाणेण बंधिदूणागददुचरिमसमयतिरिक्खदव्वं, पुणो जहण्णजोग-जहण्णबंधगध्दाहि णिरय-तिरिक्खाउआणि बंधिदूणागदतिरिक्ख- तिचरिमसमयट्टिदतिरिक्खदव्वं च, सरिसाणि । एदेण कमेण विगलपक्खेवभागहारं अप्पिदगोवुच्छभागहारं जोगट्ठाणध्दाणं च जाणिदूण ओदारेदव्वं जाव अट्टमीए आगरिसाए णिरयाउअं बंधिय तिस्से चरिमसमए वट्टमाणो ति ।

< साधिक पूर्वकोटिको अपवर्तित करनेपर लब्धको उसीमेंसे कम कर देना चाहिये । ऐसा करनेसे जो शेष रहे वह वहांके विकल प्रक्षेपका भागहार होता है । इससे सकल प्रक्षेपको खण्डित कर उनमेंसे एक खण्डको सकल प्रक्षेपके भागहार प्रमाण सकल प्रक्षेपोंमेंसे घटा करके पृथक्

स्थापित कर फिर इनके सकल प्रक्षेप करते हैं । यथा--इस भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंमें यदि एक सकल प्रक्षेप प्राप्त होता है तो श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र विकल प्रक्षेपोंमें कितने सकल प्रक्षेप प्राप्त होंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर प्रकृत गोपुच्छके सकल प्रक्षेप होते हैं । >

< अब योगस्थानाध्वानका कथन करते हैं । यथा--एक सकल प्रक्षेपोंमें यदि चरम-निषेक-भागहारके अर्ध भागसे कुछ कम योगस्थानाध्वान पाया जाता है तो श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेपोंमें कितना योगस्थानाध्वान पाया जायगा, इस प्रकार प्रमाणसे फल-गुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर योगस्थानाध्वान प्राप्त होता है । इतने मात्र योगस्थानों सम्बन्धी चरम योगस्थानसे आयुको बांधकर आये हुए द्विचरम समयवर्ती तिर्यचका द्रव्य, तथा जघन्य योग और जघन्य आयुबन्धककालसे नारक या तिर्यच आयुको बांधकर आये हुए तिर्यच भवके त्रिचरम समयमें स्थित तिर्यचका द्रव्य, दोनों सदृश हैं । इस प्रकार विकल-प्रक्षेप-भागहार, विवक्षित गोपुच्छके भागहार और योगस्थानाध्वानको जानकर आठवें अप-कर्षमें नारकायुको बांधकर उसके चरम समयमें वर्तमान होने तक उतारना चाहिये । >

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्तं

‘संपधि एत्तो हेड्डा पुव्वविहाणेण ओदारिज्जमाणो (अ-क प्रत्योः ‘माणे’ इति पाठः ।) गिरयाउअं हाइदूण गच्छदि त्ति कट्टु (अ-आप्रत्योः ‘गट्टु’ इति पाठः ।) पुणो एत्थेव ड्विदूण परमाणुत्तरादिकमेण एगविगलपक्खेवो वड्डावेदव्वो । एत्थ विगलपक्खेवभागहारो संखेज्जरुवमेत्तो होदि । तं जहा-सादि-रेयपुव्वकोडिं विरलेदूण एगसगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे एगेगचरिमणिसेगो पावदि । पुणो ओदिण्णध्दाणमेत्तगोवुच्छओ इच्छामो त्ति ओदिण्णध्दाणेणोवड्डिदे संखेज्जरुवाणि लब्भंति । पुणो एदाणि विरलेदूण एगसगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे ओदिण्णध्दाणमेत्तचरिमगोवुच्छओ रुवं पडि पावेंति । पुणो एत्थ ऊणगोवुच्छविसेसा-णमागमणमिच्छामो त्ति रुवूणपुव्वकोडीए ऊणणिसेगभागहारमोदिण्णध्दाणेण गुणिय पुणो रुवूणोदिण्णध्दाणसंकलणाए ओवड्डिय रुवाहियं कादूण तेण विरलिदसंखेज्जरुवेसु अवहिरिदेसु जं लध्दं तम्मि तत्थेव सोहिदे सुध्दसेसो विगलपक्खेवभागहारो होदि । एदेण सगलपक्खेव भागे हिदे एगो विगलपक्खेवो आगच्छदि । पुणो एत्तियमेत्तं परमाणुत्तरादिकमेण वड्डिदूण ड्विदो च,

पक्खेवुत्तरजोगेण बंधिदूणागददव्वं च, सरिसं होदि । पुणो एदेण कमेण
एसभागहारमेत्तविगलपक्खेवेसु वड्ढिदेसु एगो सयल-

< अब यहांसे नीचे पूर्वोक्त विधिसे उतरता हुआ चूंकि नारक आयुको न्यून करता जाता है, अत एव फिरसे यहां ही स्थापित कर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेप बढ़ाना चाहिये । यहां विकल प्रक्षेपका भागहार संख्यात अंक प्रमाण होता है । यथा---साधिक पूर्वकोटिका विरलन करके एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक एक चरम निषेक प्राप्त होता है । अब चूंकि जितना अध्वान पीछे गये हैं तत्रमाण गोपुच्छाएं अभीष्ट हैं, अतः जितना अध्वान पीछे गये हैं उससे अपवर्तित करनेपर संख्यात अंक प्राप्त होते हैं । फिर इनका विरलन करके एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति जितना अध्वान पीछे गये हैं तत्रमाण चरम गोपुच्छ प्राप्त होते हैं । अब यहां चूंकि कम किये गये गोपुच्छविशेषोंका लाना अभीष्ट है, अतः एक कम पूर्वकोटिसे हीन निषेक-भागहारको जितना अध्वान पीछे गये हैं उससे गुणित करे । फिर उसको एक कम जितना अध्वान पीछे गये हैं उसके संकलनसे अपवर्तित करके एक रूपसे अधिक कर उसका विरलित संख्यात रूपोंमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसको उसीमेंसे कम करनेपर शेष विकल-प्रक्षेप-भागहार होता है । इसका सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर एक विकल प्रक्षेप आता है । पुनः एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे इतना मात्र बढ़कर स्थित हुआ द्रव्य, तथा प्रक्षेप अधिक योगसे आयुको बांधकर आये हुए जीवका द्रव्य, दोनों सदृश हैं । फिर इस क्रमसे उक्त भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंकी वृद्धि होनेपर एक सकल प्रक्षेप बढ़ता है । इस प्रकार आठवें >

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

‘पक्खेवो वड्ढिदि । एवं वड्ढावेदव्वं जाव अड्ढागरिसाए दुचरिमसमयप्पहुडि सत्ताग-रिसाए चरिमसमओ त्ति एदासिं (ताप्रतो ‘त्ति । एदासिं’ इति पाठः।) तिरिक्खगोवुच्छाणं जत्तिया सगलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता वड्ढिदा त्ति । एवं वड्ढिदूण ड्ढिदो च, अण्णेगो जहण्णजोग-जहण्णबंधग-ध्दाहि तिरिक्खाउअं बंधिय पुणो अड्ढहि आगरिसाहि णिरयाउअं बंधमाणो (प्रतिषु ‘बंधमाणे’ इति पाठः।) तत्थ छसु आगरिसासु जहण्णजोग-जहण्णबंधगध्दाहि चेव बंधिय पुणो

सत्तमीए आगरि-साए समऊणजहण्णबंधगध्दाए जहण्णजोगेण बंधिय पुणो एगसमएण अट्टमागरिस-जहण्णबंधगध्दामेत्तसमयपबध्दाणं जत्तिया सगलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ताणि जोग-ट्टाणाणि उवरि चड्ढिण बंधिय सत्तमाए आगरिसाए चरिमसमए ट्टिदो च, सरिसा। अधवा अट्टमागरिसदव्वमेवं वा वड्ढावेदव्वं-अट्टमागरिसजहण्णगध्दाहियसत्तमागरि-सजहण्णबंधगध्दाए जहण्णजोगेण च बंधाविय दोण्हं सरिसभावो वत्तव्वो । अट्टमागरिस- जहण्णबंधगध्दादो सत्तमागरिसाए जहण्णुक्कस्सबंधगध्दाणं विसेसो बहुओ त्ति कधं णव्वदे ? गुरुवदेसादो । पुणो तं मोत्तूण पुव्वविहाणेण वड्ढावेदव्वं सत्तमाए आगरिसाए दुचरिमगोवुच्चप्पहुडि जाव छट्ठागरिसाए चरिमसमयगोवुच्छा त्ति । एवं वड्ढिण ट्टिदो च, अण्णेगो अट्टहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणो तत्थ पंचसु-

< अपकर्षकेद्विचरम समयसे लेकर सातवें अपकर्षकेचरम समय तक इन तिर्यच गोपुच्छोंकेजितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र बढ जाने तक बढ़ाना चाहिये । इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ; तथा दूसरा एक जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यच आयुको बांधकर, फिर आठ अपकर्षों द्वारा नारक आयुको बांधता हुआ उनमेंसे छह अपकर्षमें जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे ही आयुको बांधकर, फिर सातवें अपकर्षमें एक समय कम जघन्य बन्धककाल और जघन्य योगसे बांधकर, फिर एक समयमें आठवें अपकर्षके जघन्य बन्धक-काल मात्र समयप्रबद्धोंके जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र योगस्थान ऊपर चढकर आयुको बांध सातवें अपकर्षकेअन्तिम समयमें स्थित हुआ; ये दोनों सदृश हैं । अथवा, आठवें अपकर्षके द्रव्यको इस प्रकार बढ़ाना चाहिये -- आठवें अपकर्षके जघन्य बन्धककालसे अधिक सातवें अपकर्षके जघन्य बन्धककालसे और जघन्य योगसे आयुको बन्धाकर दोनोंकेसादृ--श्यको कहना चाहिये । >

< शंका--आठवें अपकर्षके जघन्य बन्धककालसे सातवें अपकर्षके जघन्य व उत्कृष्ट बन्धककालोंका विशेष बहुत है, यह कैसे जाना जाता है ? >

< समाधान--यह गुरुकेउपदेशसे जाना जाता है । >

< फिर उसको छोडकर पूर्वोक्त विधिसे सातवें अपकर्षके द्विचरम गोपुच्छसे लेकर छठे अपकर्षकेअन्तिम गोपुच्छ तक बढ़ाना चाहिये । इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ; तथा दूसरा एक जीव आठ अपकर्षों द्वारा आयुको बांधता हुआ उनमेंसे पांच अपकर्षोंमें जघन्य >

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्तं

‘आगरिसासु जहण्णजोग-जहण्णबंधगध्दाहि बंधिय पुणो छट्ठागारिसाए समऊणबंध-गध्दाए जहण्णजोगेण बंधिय पुणो एगसमयं सत्तमड्डुमागरिसजहण्णबंधगध्दामेत्तसमय-पबध्दाणं जत्तिया सगलपक्खेवा अत्थि तत्तियमत्ताणि जोगट्ठाणाणि उवरि चड्ढिदूण तत्थ चरिमजोगट्ठाणेण बंधिदूणागदो च, सरिसा । एत्थ विगलपक्खेवभागहारो जाणिदूण वत्तव्वो । एदमत्थपदमवहारिय ओदारेदव्वं जाव पढ्मागरिसाए चरिम-समओ ति । पुणो तत्थ ड्ढाईदूण परमाणुत्तरादिकमेण वड्ढावेदव्वं जाव एगविगल-पक्खेवो वड्ढिदो ति ।

‘पुणो एत्थ विगलपक्खेवभागहारो वुच्चदे । तं जहा-सादिरेयपुव्वकोडीए सगलपक्खेवे भागे हिदे तिरिक्खचरिमगोवुच्छ लब्भदि । पुणो अंतोमुहुत्तूणपुव्व-कोडितिभागेण चरिमगोवुच्छभागहारभूद (अ-आ-काप्रतिषु ‘भागहारोभूद’, ताप्रतौ ‘भागहारीभू (ब्भू) द’ इति पाठः ।) सादिरेयपुव्वकोडीए भागे हिदाए सादिरेयतिण्णिणरुवाणि आगच्छंति । ताणि विरलेदूण सगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे रुवं पडि समाणगोवुच्छओ पावेंति । पुणो चरिमगोवुच्छए णिसेग-भागहारमोदिण्णध्दाणगुणिदं रुवूणोदिण्णध्दाणसंकलणाए (ताप्रतौ ‘-ध्दाणं संकलणाए’ इति पाठः ।) ओवट्ठिदं रुवाहियं कादूण विरलिदतिण्णिणरुवाणि खंडेदूण तत्थ एगखंडे सादिरेयतिसु रुवेसु

< योग और जघन्य बन्धककालसे बांधकर, फिर छोटे अपकर्षके एक समय कम बन्धक-कालमें जघन्य योगसे बांधकर, फिर एक समयमें सातवें व आठवें अपकर्षके जघन्य बन्धककाल मात्र समयप्रबद्धोंके जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र योगस्थान ऊपर चढकर उनमें अन्तिम योगस्थानसे आयुको बांधकर आया हुआ; ये दोनों सदृश हैं । यहां विकल प्रक्षेपके भागहारको जानकर कहना चाहिये । इस अर्थपदका निश्चय करके प्रथम अपकर्षके अन्तिम समय तक उतारना चाहिये । फिर वहां स्थित होकर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेपके बढने तक बढाना चाहिये । >

< अब यहां विकल प्रक्षेपका भागहार कहते हैं । वह इस प्रकार है-साधिक पूर्वकोटिका सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर तिर्यचकी चरम गोपुच्छा प्राप्त होती है । फिर अन्तर्मुहूर्त कम

पूर्वकोटिके त्रिभागका चरम गोपुच्छके भागहारभूत साधिक पूर्वकोटिमें भाग देनेपर साधिक तीन रूप आते हैं । उनका विरलन करके सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर रूपके प्रति समान गोपुच्छ प्राप्त होते हैं । फिर जितना अध्वान पीछे गये हैं उससे गुणित और एक कम जितना अध्वान पीछे गये हैं उसकी संकलनासे अपवर्तित ऐसे चरम गोपुच्छ सम्बन्धी निषेकभागहारको एक रूपसे अधिक करके उससे विरलित तीन रूपोंको खण्डित कर उनमें एक खण्डमेंसे साधिक तीन रूपोंको कम करनेपर फिर >

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

‘अवणिदेसु पुणो वि सादिरेयतिण्णिरुवाणि चव उव्वरंति, पुव्विल्लअहियादो संपहि-यऊणीकदंसस्स असंखेज्जगुणहीणत्तुवलंभादो । एदेण विगलपक्खेवभागहारेण सगल-पक्खेवे भागे हिदे एगविगलपक्खेवो आगच्छदि । एवं वड्ढिदूण द्विदो च, पुणो अण्णेगो पक्खेवुत्तरजोगेण बंधिदूणागदो च, सरिसा । एवं ताव वड्ढावेदव्वं जाव जहण्णजोग-जहण्णबंधगध्दाहि तिरिक्खाउअं बंधिय जलचरेसुप्पज्जिय सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो होदूण जीविदूणागदअंतोमुहुत्तध्दपमाणेण किंनूणपुव्वकोडिं सव्वमेगसम-एण कदलीघादेण धादिदूण पुणो णिरयाउअं बंधमाणो (अप्रतौ ‘बंधियमाणो’ इति पाठः।) जहण्णजोगेण अट्टण्णभाग-रिसाणं जहण्णबंधगध्दासंकलणमेत्ताए अट्टागरिसाहि बंधमाणस्स पढमागरिसाए (आप्रतौ ‘पढमगरिसाणं’ इति पाठः।) बंधिय बंधगध्दाचरिमसमए वट्टमाणभुंजमाणाउअदव्वम्मि एदेणप्पिददेसूणपुव्वकोडि-तिभागदव्वेणूणम्मि जत्तिया सयलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता वड्ढिदा त्ति । एवं वड्ढिदूण द्विदो च, अण्णेगो जहण्णजोग-जहण्णबंधगध्दाहि तिरिक्खाउअं बंधिय जल-चरेसुप्पज्जिय सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो होदूण जीविदूणागदअंतो-मुहुत्तध्दपमाणेण किंनूणपुव्वकोडिं सव्वमेगसमएण कदलीघादेण धादिदूण जहण्णजो-गेण समऊणजहण्णबंधगध्दाए णिरयाउअं बंधिय पुणो चरिमसमए तप्पाओग्गजोगेण

< भी साधिक तीन रूप ही शेष रहते हैं, क्योंकि, पूर्वोक्त अधिकसे साम्प्रतिक कम किया हुआ अंश असंख्यातगुणा हीन पाया जाता है । इस विकल-प्रक्षेप-भागहारका सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर एक विकल प्रक्षेप आता है । इस प्रकार बढकर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव प्रक्षेप

अधिक योगसे आयुको बांधकर आया हुआ, दोनों सदृश हैं । इस प्रकार तब तक बढ़ाना चाहिये जब तक कि जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यच आयुको बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न हो सर्वलघु कालमें सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्तक हो, जीवित रहकर आये हुए अन्तर्मुहूर्त काल प्रमाणसे कुछ कम सम्पूर्ण पूर्वकोटिको एक समयमें कदलीघातसे घातकर फिर नारक आयुको बांधता हुआ जघन्य योगसे आठ अपकर्षोंके जघन्य बन्धककालके संकलन मात्रमें आठ अपकर्षों द्वारा बांधनेवालेके प्रथम अपकर्षसे बांधकर बन्धककालके अन्तिम समयमें रहनेवाले इस विवक्षित कुछ कम पूर्वकोटिके त्रिभाग मात्र द्रव्यसे हीन भुंजमान आयुके द्रव्यमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र नहीं बढ़ जाते । इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यच आयुको बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न हो सर्वलघु कालमें सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्तक होकर जीवित रहकर आये हुए अन्तर्मुहूर्त कालके प्रमाणसे कुछ कम समस्त पूर्वकोटिको एक समयमें कदली-घातसे घातकर जघन्य योग और एक समय कम जघन्य बन्धककालसे नारक आयुको बांधकर फिर अन्तिम समयमें तत्प्रायोग्य योगसे सात अपकर्षोंके द्रव्यको बांधकर >

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्तं

सत्तण्णमागरिसाणं दव्वं बंधिय द्विदो च, सरिसा । पुव्विल्लं मोत्तूण एदं कदलीघा-ददव्वं घेत्तूण बंधगध्दाजोगं च अरिसदूण वड्ढावेदव्वं । एवं वड्ढाविज्जमाणे दव्वस्स अणंतभागवड्ढि असंखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जगुणवड्ढि-असंखेज्जगुणवड्ढि ति पंचवड्ढीओ होंति । जोगस्स पुण असंखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढि-संखेज्ज-गुणवड्ढि-असंखेज्जगुणवड्ढि ति चत्तारिवड्ढीयो । बंधगध्दाए असंखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जगुणवड्ढि ति तिण्णिवड्ढीओ । तं कध वड्ढाविज्जदे ? वुच्चदे-संपधि दव्वस्सुवरि परमाणुत्तरादिकमेण एगो विगलपक्खेवो वड्ढावेदव्वो । एत्थ विगलपक्खेवभागहारो को होदि ? एगरुवमेगरुवस्स संखेज्जदिभागो च । तं जहा-किंत्तूणपुव्वकोडिं विरलेदूण एगसगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे पढमणिसेयपमाणं पावदि । पुणो कदलीघादहेट्ठिमसमयप्पहुडि पढमसमओ ति अंतो-मुहुत्तेण पुव्विल्लभागहारमोवट्ठिय विरलेदूण समखंडं कादूण दिण्णे अंतोमु-हुत्तमेत्ता पढमणिसेगा पावेंति । पुणो हेट्ठा णिसेगभागहारं पुव्विल्लंतोमुहुत्तगुणिदंरुवूणंतो-

< स्थित हुआ, ये दोनों सदृश हैं । पूर्व द्रव्यको छोड़कर और इस कदलीघात द्रव्यको ग्रहण करके बन्धककाल व योगका आश्रय करके बढ़ाना चाहिये । इस प्रकार बढ़ाते समय द्रव्यके अनन्तभागवृद्धि, असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि संख्यातगुणवृद्धि, और असंख्यातगुणवृद्धि, ये पांच वृद्धियां होती हैं । किंतु योगके असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणवृद्धि, ये चार ही वृद्धियां होती हैं । बन्धककालके असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि और संख्यातगुणवृद्धि, ये तीत वृद्धियां होती हैं । >

< शंका-वह कैसे बढ़ाया जाता है ? >

< समाधान-इसका उत्तर कहते हैं-अब यहां द्रव्यके ऊपर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेप बढ़ाना चाहिये । >

< शंका--यहां विकल प्रक्षेपका भागहार क्या होता है ? >

< समाधान-उसका भागहार एक रूप और एक रूपका संख्यातवां भाग होता है: यथा-कुछ कम पूर्वकोटिका विरलन करके एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर प्रथम निषेकका प्रमाण प्राप्त होता है । फिर कदलीघातके अधस्तन समयसे लेकर प्रथम समय तकके अन्तर्मुहूर्त कालसे पूर्वोक्त भागहारको अपवर्तित करके विरलित कर सकल प्रक्षेपको समखंड करके देनेपर अन्तर्मुहूर्त प्रमाण प्रथम निषेक प्राप्त होते हैं । फिर नीचे निषेकभागहारको पूर्वोक्त अन्तर्मुहूर्तसे गुणित कर फिर >

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

‘मुहुत्तसंकलणाए खंडिदं विरलिय उवरिमएगरुवधरिदपमाणं समखंडं करिय दादूण उवरिमरुवधरिदेसु सव्वत्थ अवणिदे पगदिसरुवेण गलिददव्वमवसिट्ठं होदि । पुणो अवणिददव्वं पि तप्पाणेण कादूण भागहारो वड्ढावेदव्वो । तेसिं पक्खेवरुवाणमाण-यणं वुच्चदे । तं जहा-रुवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तेसु जदि एगा पक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणसंखेज्जरुवेसु किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओव-ट्टिदाए लध्दमेगरुवस्स असंखेज्जदिभागो । तं उवरिमविरलणसंखेज्जरुवेसु पक्खिविय तेण सगलपक्खेवे भागे हिदे पगडिसरुवेण णड्ढदव्वं (प्रतिषु ‘सरुवेणड्ढदव्वं’ इति पाठः ।) होदि । एदं (ताप्रतौ ‘एवं’ इति पाठः ।) पुध ड्ढविय पुणो विगिदिसरुवेण गलिददव्वं भणिस्सामो । तं जहा-संखेज्जरुवेहि ओवट्टिदपुव्व-कोडिम्हि (ताप्रतौ

‘पूवकोडीहि’ इति पाठः ।) अंतोमुहुत्तूणणिसेगभागहारेण संखेज्जरुवगुणिदेण अंतोमुहुत्तादिउत्तर-संखेज्जरुवगच्छसंकलणोवट्टिदेण रुवूणेण संखेज्जरुवोवट्टिदपुव्वकोडिं खंडिय तत्थेगखंडे पक्खित्ते पढमविगिदिगोवुच्छभागहारो होदि । पुणो एदं रुवूणजहण्णा-उअबंधगध्दाए ओवट्टिय विरलेदूण एगसगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे

< उसे एक कम अन्तर्मुहूर्तकी संकलनासे खण्डित कर लब्धका विरलन करके उपरिम विरलन राशिके एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देकर सर्वत्र उपरिम विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त राशियोंमेंसे कम करनेपर शेष रहा प्रकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्य होता है । फिर घटाये गये द्रव्यको भी उसके प्रमाणसे करके भागहारको बढ़ाना चाहिये । >

< उन प्रक्षेप अंकोंके लानेके विधानको कहते हैं । यथा--एक रुप कम अधस्तन विरलन मात्र रुपोंमें यदि एक प्रक्षेपशलाका पायी जाती है तो उपरिम विरलनके संख्यात रुपोंमें कितनी प्रक्षेपशलाकायें प्राप्त होगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अप-वर्तित करनेपर एक रुपका असंख्यातवां भाग लब्ध होता है । उसको उपरिम विरलनके संख्यात रुपोंमें मिलाकर उसका सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर लब्ध प्रकृति स्वरूपसे नष्ट द्रव्य होता है । इसको पृथक् स्थापित कर फिर विकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्यका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है- >

< संख्यात रुपोंसे अपवर्तित पूर्वकोटिमें संख्यात रुपोंसे गुणित व अन्तर्मुहूर्त आदि उत्तर संख्यात रुप गच्छसंकलनासे अपवर्तित ऐसे अन्तर्मुहूर्त कम निषेक-भागहारमेंसे एक कस करनेपर जो शेष रहे उसका संख्यात रुपोंसे अपवर्तित पूर्वकोटिमें भाग देकर जो एक भाग प्राप्त हो, उसको मिला देनेपर प्रथम विकृतिगोपुच्छाका भागहार होता है । फिर इसको रुप कम जघन्य आयुके बन्धककालसे अपवर्तित करके विरलित कर एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर विरलन अंकके प्रति एक रुप >

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्तं

‘विरलणरुवं पडि रुवूणबंधगध्दामेत्ताओ पढमविगिदिगोवुच्छओ पावेंति । पुणो अधिगविसेसा जहा णस्सिदूण आगच्छंति तथा वत्तइस्सामो । तं जहा-अंतोमुहुत्तू-णणिसेगभागहारं संखेज्जरुवगुणिदं पुणो अवणिदसंखेज्जपुव्वकोडि (प्रतिषु ‘पुव्वकोडि-’इति पाठः ।) रुवूणाउअबंध-गध्दागुणिदं हेट्ठा

विरलेदूण उवरिमेगरुवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे एगेगविसेसो पावदि । पुणो संखेज्जादिसंखेज्जुत्तरदुरुवूणाउअबंधगध्दासंकलणाए ओवट्टिय विर-लेदूण उवरिमेगरुवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे इच्छिदविसेसा पावेंति । पुणो रुवूणहेट्टिमविरलणाए उवरिमविरलणसंखेज्जरुवाणि खंडिदूण लध्दं तत्थेव पक्खि-विय तेहि एगसगलपक्खेवे भागे हिदे विगिदिसरुवेण गलिददव्वमागच्छदि । पुणो पगदिसरुवेण गलिददव्वस्स विगिदिसरुवेण गलिददव्वेण सह आगमणमिच्छामो ति पगदिसरुवेण गलिददव्वेण विगिदिसरुवेण गलिददव्वमि भागे हिदे संखेज्जरुवाणि लब्भंति । पुणो तेहि रुवाहिएहि विगिदिभागहारमोवट्टिय लध्दं तम्मि चेव अवणिदे पगदि-विगिदिसरुवेण गलिददव्वभागहारो होदि । पुणो एदेण सगलपक्खेवे भागे हिदे पगदि विगिदिसरुवेण गलिददव्वं होदि । एदम्मि रुवूणभागहारेण गुणिदे विगल-

< कम बन्धककाल मात्र प्रथम विकृति गोपुच्छयें प्राप्त होती हैं । अब अधिक विशेष जिस प्रकार नष्ट होकर आते हैं वैसा कथन करते हैं । तथा--अन्तर्मुहूर्त कम निषेकभागहारको संख्यात रूपोंसे गुणित कर फिर संख्यात पूर्वकोटियोंका अपनयन करके शेषको एक कम आयुबन्धककालसे गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उसका नीचे विरलन करके उपरिम एक रूपके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर एक एक विशेष प्राप्त होता है । फिर संख्यातको आदि लेकर संख्यात उत्तर दो रूपोंसे कम आयुबन्धककालकी संकलनासे अपवर्तित करके विरलित कर उपरिम विरलनके एक अंकके प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर इच्छित विशेष प्राप्त होते हैं । फिर रूप कम अधस्तन विरलन द्वारा उपरिम विरलनके संख्यात रूपोंको खण्डित कर लब्धको उसीमें मिलाकर उनका एक सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर विकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण हुआ द्रव्य आता है । >

< अब चूंकि विकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्यके साथ प्रकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्यका लाना अभीष्ट हैं, अतः प्रकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्यका विकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्यमें भाग देनेपर संख्यात रूप प्राप्त होते हैं । फिर एक रूपसे अधिक उनके द्वारा विकृतिभागहारको अपवर्तित कर लब्धको उसीमेंसे कम करनेपर प्रकृति व विकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्यका भागहार होता है । फिर इसका सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर प्रकृति व विकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्य होता है । इसको रूप कम भागहारसे गुणित करनेपर विकल प्रक्षेप होता है । इसलिये विकल >

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

‘पक्खेवो होदि । तेण विगलपक्खेवभागहारो एगरुवमेगरुवस्स संखेज्जदिभागो च होदि ति भणिदं । एवंविहमेगविगलपक्खेवं दोहि वड्ढीहि वड्ढिदूण द्विदो च, अण्णेगो तिरिक्खाउअं बंधमाणो समऊणबंधगध्दाए जहण्णजोगेण बंधिय पुणो एगसमयं पक्खे-वुत्तरजोगेण बंधिदूणागदो च, सरिसा । पुणो पुव्विल्लं मोत्तूण परमाणुत्तरादि (आ प्रतौ ‘इमं घेत्तूण’ इति पाठः ।) कमेण दोहि वड्ढीहि एगविगलपक्खेवो वड्ढावेदव्वो । एवं वड्ढिदूण द्विदो च, अण्णेगो सम-ऊणजहण्णबंधगध्दाए जहण्णजोगेण बंधिय पुणो एगसमयं दुपक्खेवुत्तरजोगेण बंधिदूणा-गदो च, सरिसा । एदेण कमेण विगलपक्खेवभागहारमेत्तविगलपक्खेवेसु वड्ढिदेसु रुवूणभागहारमेत्तसयलपक्खेवा वड्ढंति । एवं वड्ढिदूण द्विदो च, अण्णेगो जहण्णजोग-जहण्णबंधगध्दाहि तिरिक्खाउअं बंधिय पुणो कदलीघादं कादूण समऊणजहण्णबंध-गध्दाए णिरयाउअं जहण्णजोगेण बंधिय पुणो एगसममं रुवूणभागहारमेत्तजोगद्वा-णाणं चरिमजोगद्वाणेण बंधिदूण द्विदो च, सरिसा । पुणो एदं घेत्तूण तिरि-क्खाउअदव्वस्सुवरि भागहारमेत्ता (अ-काप्रत्यौः ‘मेत्ताणि’ इति पाठः । ‘मेत्तं’ इत्थापि पाठः ।) विगलपक्खेवा वड्ढावेदव्वो । एदं वड्ढिदूण द्विदो च, पुणो णिरयाउअं बंधमाणो पुव्विल्लजोगस्सुवरि एगसमयं रुवूणभागहार-->

< प्रक्षेपका भागहार एक रुप और एक रुपका असंख्यातवां भाग होता है, ऐसा कहा गया है । >

< इस प्रकारके विकल प्रक्षेपको दो वृद्धियों द्वारा बढाकर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव तिर्यच आयुको बांधता हुआ एक समय कम बन्धककाल और जघन्य योगसे बांध-कर पुनः एक समयमें एक प्रक्षेप अधिक योगसे बांधकर आया हुआ, दोनों सदृश हैं । >

< अब पूर्वको छोडकर एक परमाणू अधिक आदिके क्रमसे दो वृद्धियों द्वारा एक विकल प्रक्षेपको बढाना चाहिये । इस प्रकार बढकर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव समय कम जघन्य बन्धककाल व जघन्य योगसे आयुको बांधकर फिर एक समयमें दो प्रक्षेपोंसे अधिक योगसे बांधकर आया हुआ, ये दोनों सदृश हैं । >

< इस क्रमसे विकल-प्रक्षेप-भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंकी वृद्धि हो जानेपर रुप कम भागहार मात्र सकल प्रक्षेप बढते हैं । इस प्रकार बढकर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव जघन्य

योग व जघन्य बन्धककालसे तिर्यच आयुको बांध कर फिर कदलीघात करके एक समय कम जघन्य बन्धककाल व जघन्य योगसे नारक आयुको बांधकर फिर एक समयमें रुप कम भागहार मात्र योगस्थानोंमें अन्तिम योगसे आयुको बांधकर स्थित हुआ, ये दोनों सदृश हैं । >

< अब इसको ग्रहण करके तिर्यच आयुके द्रव्यके ऊपर भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंको बढ़ाना चाहिये । इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ, तथा नारक आयुको >

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्तं

‘मेत्तजोगद्वाणाणं चरिमजोगद्वाणेण बंधिदूण द्विदो च, सरिसा । पुणो एदेण कमेण तिरिक्खाउअदव्वस्सुवरि भागहारमेत्ता विगलपक्खेवा वड्ढावेदव्वा । एवं वड्ढिदूण द्विदो च, अण्णेगो जहण्णजोग-जहण्णबंधगध्दाहि तिरिक्खाउअं बंधिय पुणो णिरया-उअं बंधमाणो एगसमयं पुव्विल्लजोगद्वाणादो रुवूणभागहारमेत्तजोगद्वाणाणं चरिमजोगद्वाणेण बंधिदूण द्विदो च, सरिसा । एवं कमेण वड्ढावेदव्वं जाव जहण्ण-जोगद्वाणपक्खेवभागहारम्मि जेतिया सगलपक्खेवा अत्थि तेत्तियमेत्ता (अ-आ-काप्रतिषु ‘तत्तियमेत्त’ इति पाठः ।) वड्ढिदो च । एवं वड्ढिदूण द्विदो च पुणो अण्णेगो जहण्णजोग-जहण्णबंधगध्दाहि तिरिक्खा उअं बंधिय पुणो जलचरेसुप्पज्जिय समरूणजहण्णबंधगध्दाए जहण्णजोगेण णिरया-उअं बंधिय पुणो दोसमयं जहण्णजोगेण चेव बंधिदूण द्विदो च, सरिसा ।

‘संपहि इमं घेतूण तिरिक्खाउअजहण्णदव्वस्सुवरि परमाणुत्तरादिकमेण भागहारमेत्तविगलपक्खेवा वड्ढावेदव्वा । एवं कदे रुवूणभागहारमेत्ता सगलपक्खेवा वड्ढिदो होंति । एवं वड्ढिदूण द्विदो च, अण्णेगो जहण्णजोग-जहण्णबंधगध्दाहि (प्रतिषु ‘अण्णेगो जहण्णबंधगध्दाहि’ इति पाठः ।)

< बांधता हुआ पूर्व योगके ऊपर एक समयमें रुप कम भागहार मात्र योगस्थानोंमें अन्तिम योगस्थानसे बांधकर स्थित हुआ, दोनों सदृश हैं । >

< अब इस क्रमसे तिर्यच आयुके द्रव्यके ऊपर भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंको बढ़ाना चाहिये । इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यच आयुको बांधकर फिर नारक आयुको बांधता हुआ एक समयमें पूर्व

योगस्थानसे रूप कम भागहार मात्र योगस्थानोंमें अन्तिम योगस्थानसे बांधकर स्थित हुआ, ये दोनों सदृश हैं । >

< इस प्रकार क्रमसे जघन्य योगस्थानप्रक्षेपभागहारमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र बढ जाने तक बढाना चाहिये । इस प्रकार बढकर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यच आयुको बांधकर फिर जलचरोंमें उत्पन्न होकर एक समय कम जघन्य बन्धककालमें जघन्य योगसे नारक आयुको बांधकर फिर दो समयमें जघन्य योगसे ही बांधकर स्थित हुआ, ये दोनों सदृश हैं । >

< अब इसको ग्रहण कर तिर्यच आयुके जघन्य द्रव्यके ऊपर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंको बढाना चाहिये । ऐसा करनेपर रूप कम भागहार प्रमाण सकल प्रक्षेप बढ जाते हैं । इस प्रकार बढकर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यच आयुको बांधकर >

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

तिरिक्खाउअं बंधिय जलचरेसुप्पज्जिय कदलीघादं कादूण जहण्णजोग-जहण्ण-बंधगध्दाहि णिरयाउअं बंधिय पुणो एगसमयं जहण्णजोगस्सुवरि रुवूणभागहारमेत्ताणं जोगट्ठाणाणं चरिजोगट्ठाणेण बंधिदूण द्विदो च, सरिसा । पुणो इमं घेत्तूण पुव्व-विहाणेण वट्ठाविय सरिसं करिय तत्थ पच्छिल्लजीवदव्वं घेत्तूण पुव्वविहाणेण वट्ठा-विय सरिसं करिय तत्थ पच्छिल्लदव्वं घेजूण पुणो (अ-आ-काप्रतिषु 'करिय तत्थ पच्छिल्लजीवदव्वं घेत्तूण पुव्वविहाणेण वट्ठाविय सरिसं करिय तत्थ पच्छिल्लं (मप्रतावतोऽप्रे 'जीवदव्वं घेत्तूण' इत्याधिकः पाठः) पुणो, ताप्रतौ 'करिय पुव्विल्लजीवदव्वं घेत्तूण पुणो' इति पाठः।) वि वट्ठावेदव्वं । एवं णेदव्वं जाव सो एगो समओ दुगुणजोगं पत्तो त्ति । एवं वट्ठिदूण द्विदो च, अण्णेगो जह-ण्णजोग-जहण्णबंधगध्दाहि तिरिक्खाउअं बंधिय जलचरेसुप्पज्जिय जहण्णजोग-जहण्ण-बंधगध्दाहि णिरयाउअं बंधिय पुणो एगसमयं दुगुणजोगेण बंधिय द्विदो च, अण्णेगो जहण्णजोग-जहण्णबंधगध्दाहि तिरिक्खाउअं बंधिय जलचरेसुप्पज्जिय पुणो दुसम-याहियजहण्णबंधगध्दाए जहण्णजोगेण च णिरयाउअं बंधिय द्विदो च, तिण्णि वि सरिसा ।

‘पुणो पुव्वुत्तदोजीवे मोत्तूण इमं घेत्तूण जहण्णजोगं दुगुणजोगं च अस्सिदूण णिरयाउअबंधगध्दा समउत्तरादिकमेण वड्ढावेदव्वा जाव जहण्णपरित्तासंखेज्जेण खंडिदेगखंडं वड्ढिदं ति । एवं वड्ढिदूण द्विदे णिरयाउअजहण्णबंधगध्दाए असंखे-ज्जभागवड्ढी (अ-आ-काप्रतिषु ‘असंखेज्जदिभगावड्ढी’, ताप्रतौ ‘असंखे भागवड्ढी’ इति पाठः ।) चेव ।

< जलचरोंमें उत्पन्न हो कदलीघात करके जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे नारक आयुको बांधकर फिर एक समयमें जघन्य योगके ऊपर रूप कम भागहार मात्र योगस्थानोंमें अन्तिम योगस्थानसे बांधकर स्थित हुआ, ये दोनों सदृश हैं । >

< अब इसको ग्रहण करके पूर्व विधिसे बढ़ाकर सदृश करके उनमें पिछले जीवके द्रव्यको ग्रहण कर फिरसे भी बढ़ाना चाहिये । इस प्रकार जब तक यह एक समय दुगुने योगको प्राप्त न हो जावे तब तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव जघन्य योग व जघन्य बन्धककालसे तिर्यच आयुको बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न हो जघन्य योग व जघन्य बन्धककालसे नारक आयुको बांधकर फिर एक समयमें दुगुने योगसे बांधकर स्थित हुआ , तथा अन्य एक जीव जघन्य योग व जघन्य बन्धककालसे तिर्यच आयुको बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न हो फिर दो समयोंसे अधिक जघन्य बन्धककाल व जघन्य योगसे नारक आयुको बांधकर स्थित हुआ, ये तीनों ही जीव सदृश हैं । >

< अब पूर्वोक्त दो जीवोंको छोड़कर और इसको ग्रहण कर जघन्य योग व दुगुणित योगका आश्रय कर नारक आयुके बन्धककालको एक समय अधिकता आदिके क्रमसे जघन्य परीतासंख्यातसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण वृद्धि हो चुकने तक बढ़ाना चाहिये । इस प्रकार बढ़कर स्थित होनेपर नारक आयुके जघन्य बन्धककालसे असंख्यातभागवृद्धि ही होती है । विशेष इतना है कि कदलीघात द्रव्य, >

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्तं

‘णवरि कदलीघाददव्वं तब्बंधगध्दा दोण्णं (अप्रतौ ‘तब्बंधगध्दामेत्तदोण्णं’ इति पाठः ।) जोगो च जहण्णा चेव । पुणो णिरया-उअजहण्णबंधगध्दं उक्कस्ससंखेज्जेण खंडिदूण पुणो तत्थ एगखंडे जहण्णबंधगध्दाए वड्ढिदे संखेज्जभागवड्ढीए आदि असंखेज्जभागवड्ढीए परिसमत्ती च जादा (अ-

आ-काप्रतिषु 'जादो' इति पाठः ।) । एदेण कमेण बंधगध्दा वड्ढावेदव्वा जाव जहण्णादो बंधगध्दादो उक्कस्सिया संखेज्ज-गुणाजादा ति ।

एथ चरिमवियप्पो वुच्चदे । तं जहा-जहण्णजोग-जहण्णबंधगध्दाहि तिरिक्खाउअं बंधिय जलचरेसुप्पज्जिय कदलीघादं कारुण जहण्णजोगेण दुसमऊणु-क्कस्सबंधगध्दाए च णिरयाउअं बंधिय पुणो एगसमयं दुगुणजोगेण बंधिय द्विदो च, पुणो अण्णोजीवो जहण्णजोग-जहण्णबंधगध्दाहि जलचरेसु आउअं बंधिय पुणो जह-ण्णजोगेण उक्कस्सबंधगध्दाए च णिरयाउअं बंधिय द्विदो च, सरिसा । णवरि सव्वत्थ णिरयाउअबंधगध्दा समउत्तरा चेव होदूण वड्ढदि, अट्टागरिसबंधगध्दादो सत्तागरिस-बंधगध्दाए जहण्णियाए वि संखेज्जगुणत्तादो । संपधि णिरयाउअबंधगध्दा उक्कस्सा जादा । णवरि तज्जोगो जहण्णो चेव । इमं घेत्तूण पुव्वविहाणेण परमाणुत्तरादिकमेण दव्वं वड्ढाविय जोगो वड्ढावेदव्वो जाव तप्पाओग्गमसंखेज्जगुणजोगं पत्तो ति ।

< नारकायुका बन्धककाल और दोनोंके योग जघन्य ही हैं । फिर नरकायुके जघन्य बन्धक-कालको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित कर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण जघन्य बन्धककालमें वृद्धि हो चुकनेपर संख्यातभागवृद्धिका प्रारंभ और असंख्यातभागवृद्धिकी समाप्ति होती है । इस क्रमसे उत्कृष्ट कालके जघन्य बन्धककालसे संख्यातगुणे हो जाने तक बन्धककालको बढ़ाना चाहिये ।

>

< यहां अन्तिम विकल्पको कहते हैं । वह इस प्रकार है ।- जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यच आयुको बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न हो कदलीघात करके जघन्य योग और दो समय कम उत्कृष्ट बन्धककालसे नरकायुको बांधकर फिर एक समयमें दुगुणित योगसे बांधकर स्थित हुआ, तथा दूसरा जीव जघन्य योग व जघन्य बन्धककालसे जलचरोंमें आयुको बांधकर पुनः जघन्य योग और उत्कृष्ट बन्धककालसे नरकायुको बांधकर स्थित हुआ, ये दोनों सदृश हैं । विशेषता केवल इतनी हैं कि सब जगह नरकायुका बन्धककाल एक एक समय अधिक होकर ही बढ़ता है, क्योंकि, आठ अपकर्ष आठ रूप बन्धककालसे सात अपकर्ष रूप बन्धककाल जघन्य भी संख्यातगुणा है । अब नरकायुका बन्धककाल उत्कृष्ट हो जाता है । विशेष इतना है कि उसका योग जघन्य ही है । इसको ग्रहण करके पूर्वोक्त विधिसे एक परमाणु अधिक आदिके

क्रमसे द्रव्यको बढ़ाकर तत्प्रायोग्य असंख्यातगुणे योगके प्राप्त होने तक योगको बढ़ाना चाहिये ।

>

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

‘सो जोगो किंविधो (प्रतिषु ‘किंविधो’ इति पाठः।) त्ति भणिदे एगो तिरिक्खाउअं जहण्णजोग-जहण्णबंध-गध्दाहि बंधिय कदलीघादं कादूण समऊणुक्कस्सबंधगध्दाए जहण्णजोगेण णिरयाउअं बंधिय पुणो एगसमयं जत्तियमेत्ताणि जोगद्धाणाणि चडिदुं सक्कदि तत्तियमेत्ताणं जोगद्धाणाणं चरिमजोगद्धाणमेत्तं गहिदं । एवं उक्कस्सबंधगध्दाए एगो समओ तप्पाओग्गमसंखेज्जगुणं जोगं पत्तो । जहा एसो एगसमओ (अ-आप्रत्योः ‘एसो समओ’, का-ताप्रत्योः ‘एसो ससमओ’ इति पाठः।) तप्पाओग्गमसंखेज्जगुणं जोगं णीदो एवं सेसेगेग (मप्रतिपाठोऽयम् । अप्रतौ ‘सेसेगेएग’, आप्रतौ ‘सेसेएग’, काप्रतौ ‘सेसेएगेग’ ताप्रतौ ‘सेसेग (प) ग’ इति पाठः।) समया वि तप्पाओग्गमसंखेज्जगुणजोगस्स णेदव्वा जावु-क्कस्सणिरयाउअबंधगध्दाए सव्वे समया तप्पाओग्गमसंखेज्जगुणं जोगद्धाणं पत्ता त्ति । एवमणेण विहिणा संखेज्जवारमुक्कस्सबंधगध्दा उवरि उवरि चढाविय णीदे उक्कस्सजोगं पावदि ।

‘एवं णीदे एत्थ चरिमवियप्पो (अ-आ-प्रत्योः ‘वियप्पा’ इति पाठः।) वुच्चदे । तं जहा-जलचरेसु जहण्णजोग-जहण्णबंधगध्दाहि तिरिक्खाउअं बंधिय कदलीघादं कादूण उक्कस्सजोग-उक्कस्सबंध-गध्दाहि णिरयाउअं बंधाविदे चरिमवियप्पो होदि । एवं तिरिक्खजलचरआउअदव्व-

< शंका--वह योग किस प्रकारका है ? >

< समाधान--ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि एक जीव जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यच आयुको बांधकर कदलीघात करके एक समय कम उत्कृष्ट बन्धककालमें जघन्य योगसे नरकायुको बांधकर फिर एक समयमें जितने मात्र योगस्थान बढ सकता है उतने मात्र योगस्थानों सम्बन्धी अन्तिम योगस्थान मात्र यहां ग्रहण किया गया है । >

< इस प्रकार उत्कृष्ट बन्धककालका एक समय तत्प्रायोग्य असंख्यातगुणे योगको प्राप्त हो जाता है । जिस प्रकार यह एक समय तत्प्रायोग्य असंख्यातगुणित योगको प्राप्त कराया गया

हैं इसी प्रकार शेष एक एक समयोंको भी तत्प्रायोग्य असंख्यातगुणे योगको प्राप्त कराना चाहिये जब तक कि उत्कृष्ट नारकायु सम्बन्धी बन्धककालके सब समय तत्प्रायोग्य योगस्थानको प्राप्त नहीं हो जाते । इस प्रकार इस विधिसे संख्यात वार ऊपर ऊपर चढाकर ले जानेपर उत्कृष्ट बन्धककाल उत्कृष्ट योगको प्राप्त होता है । >

< इस प्रकार ले जानेपर यहां अन्तिम विकल्प कहा जाता हैं । वह इस प्रकार हैं- जलचरोंमें जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यच आयुको बांधकर कदलीघात करके उत्कृष्ट योग और उत्कृष्ट बन्धककालसे नारकायुको बंधानेपर अन्तिम विकल्प होता है । इस प्रकार तिर्यच जलचरके आयु द्रव्यका आश्रय कर >

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्तं

‘मस्सिदूण णिरयाउअमप्पणो जहण्णदव्वप्पहुडि जावुक्कस्सदव्वेत्ति ताव परमाणुत्त-रादिकमेण णिरंतरं गंतूण उक्कस्स जादं ।

‘संपहि जोग-बंधगध्दादि (अ-आ-काप्रतिषु ‘जोगं बंधगादि’ इति पाठः।) अस्सिदूण तिरिक्खाउअदव्वं कीरदे । तं जहा जह-ण्णजोग जहण्णबंधगध्दाहि जलचरेसु पुव्वकोडाउअं बंधिय कदलीघादं कादूण उक्क-स्सजोगुक्कस्सबंधगध्दाहि णिरयाउअं बंधिय द्विदस्स भुंजमाणाउअस्मि परमाणुत्त-रादिकमेण एगो विगलपक्खेवो वड्ढावेदव्वो । एवं वड्ढिदूण द्विदो च, अण्णेगो पक्खे-वुत्तरजोगेण बंधिदूणागदो च, सरिसा । एवं जाणिदूण वड्ढावेदव्वं जाव जोगो तिरिक्खाउअं बंधगध्दा च उक्कस्सत्तं पत्ताओ त्ति । एवं दो वि आउआणि उक्कस्साणि जादाणि । एवमणंतेहि वियप्पेहि आउअस्स अजण्णपदपरुवणं कदं ।

‘आउअस्स एवं वा अजहण्णपदपरुवणा कायव्वा । तं जहा-जाव णेरइयबिदियसमओ त्ति ताव पुव्वविधाणेण ओदारिय पुणो तम्मि चेव ठविय तीहि वड्ढीहि बंधगध्दं वड्ढाविय चदुहि वड्ढीहि जोगं वड्ढाविय णिर-याउअदव्वं पंचहि वड्ढीहि उक्कस्सं कायव्वं । एवं वड्ढिदूण द्विदबिदिय-समयणेरइयो च, पढमणिसेगेणूणउक्कस्सदव्वं बंधिदूणागदपढम-

< नारकायु अपने जघन्य द्रव्यको लेकर उत्कृष्ट द्रव्य तक एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे निरंतर जाकर उत्कृष्ट हो जाता है । >

< अब योग व बन्धककाल आदिका आश्रय कर तिर्यच आयुके द्रव्यको उत्कृष्ट करते हैं । वह इस प्रकारसे-जघन्य योग व जघन्य बन्धककालसे जलचरोंमें पूर्वकोटि प्रमाण आयुको बांधकर कदलीघात करके उत्कृष्ट योग व उत्कृष्ट बन्धककालसे नरकायुको बांधकर स्थित जीवकी भुज्यमान आयुमें एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेप बढाना चाहिये । इस प्रकार बढकर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव प्रक्षेप अधिक योगसे आयुको बांधकर आया हुआ, दोनों सदृश हैं । इस प्रकार जानकर योग, तिर्यगायु व बन्धककालके उत्कृष्टताको प्राप्त होने तक बढाना चाहिये । इस प्रकार दोनों ही आयु उत्कृष्ट हो जाती हैं । इस प्रकार अनन्त विकल्पों द्वारा आयु कर्मके अजघन्य पदकी प्ररुपणा की गई है । >

< अथवा, आयु कर्मके अजघन्य पदकी प्ररुपणा इस प्रकार करना चाहिये । यथा नारकके द्वितीय समय तक पूर्व विधानसे उतार कर और वहां ही स्थापित कर तीन वृद्धियोंसे बन्धककालको बढाकर व चार वृद्धियोंसे योगको बढाकर नरकायुके द्रव्यको पांच वृद्धियों द्वारा उत्कृष्ट करना चाहिये । इस प्रकार बढकर स्थित हुआ द्वितीय समयवर्ती नारकी, तथा प्रथम निषेकसे हीन उत्कृष्ट द्रव्यको बांधकर आया हुआ प्रथम समयवर्ती नारकी दोनों सदृश हैं । >
